सम्मिलित राज्य अवर अधीनस्थ सेवा (मुख्य) परीक्षा - 2016

No. of Printed Pages : 4

CLS - 02

2016

निबंध एवं आलेखन

Essay & Drafting

निर्धारित समय : 3 घंटे]
Time allowed : 3 Hours]

[पूर्णांक : 200
[Maximum Marks : 200

*निर्देश : (i) **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।*

(ii) प्रत्येक प्रश्न के अंक उनके अंत में इंगित हैं ।

*(iii) प्रश्न संख्या-**1** का उत्तर हिंदी अथवा अंग्रेजी में दिया जा सकता है ।*

(iv) एक प्रश्न के सभी भागों का उत्तर अनिवार्यतः एक साथ दिया जाए ।

(v) पत्र लेखन में अपना नाम, पता अथवा अनुक्रमांक न लिखें । यदि अनिवार्य हो, तो क्ष, त्र, ज्ञ लिख सकते हैं ।

*Note : (i) **All** questions are Compulsory.*

(ii) Marks allotted to each question are indicated at its end.

*(iii) Question No.**1** can be attempted either in Hindi or in English.*

(iv) The part of same question must be answered together.

(v) In letter writing don't write your name, address and roll no. If necessary candidates can write x, y, z.

1. निम्नलिखित में से किसी **एक** शीर्षक पर लगभग **400** शब्दों में निबंध लिखिए : **50**

(अ) साहित्य और मानवमूल्य

(ब) भारतीय राजनीति में महिलाओं की भूमिका

(स) उत्तराखण्ड में पर्यटन संभावनाएँ

(द) प्रदूषण नियंत्रण में एन.जी.ओ. की भूमिका

(य) विज्ञान वरदान है या अभिशाप

(र) उत्तराखण्ड में भूस्खलन और बाँध

Write an essay on any **one** of the following topics in about **400** words :

(A) Literature and Human Value

(B) The role of Women in Indian Politics

(C) Probabilities of Tourism in Uttarakhand

(D) Role of N.G.O. in Pollution Control

(E) Science is Boon or Curse

(F) Landslide and Dams in Uttarakhand

2. भारतीयता से आशय केवल भारत में पैदा हुए नागरिक गुण से नहीं है, अपितु भारतीयता एक व्यापक अवधारणा है, जिसमें केवल नागरिक अधिकार या कर्तव्य मात्र नहीं आते, ये नागरिक अधिकार और कर्त्तव्य तो उसके अंग हैं ही उसके साथ ही एक उदार, सहिष्णु, त्यागी, उत्साही, कर्मवाद से प्रेरित, धैर्यसंपन्न, वैश्विक चेतना संपन्न, इन्द्रिय निग्रह करने वाला, सत्य को जीने वाला व्यक्तित्व होना भी भारतीयता की अंतर्निहित पहचान है ।

वैश्विक पटल पर भारत की और उसके नागरिकों की यही पहचान उसे पड़ोसी देशों से अलग भी करती है। स्वतंत्रता प्राप्ति से आज तक हमारे नेतृत्व ने बार-बार अपनी उदार वैश्विक दृष्टि से सब का दिल जीता है। यह उदार वैश्विक भारतीय दृष्टि हमें 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के मंत्र से मिली है। अपने और पराए की गणना हम नहीं करते। हम संपूर्ण मानवता ही नहीं, चर-अचर सभी में उसी शक्ति के दर्शन करते हैं और सभी के कल्याण में अपना कल्याण मानते हैं।

आज इस वैश्विक दृष्टि की अत्यंत आवश्यकता है। विश्व जिन स्थितियों से जूझ रहा है, उनमें भारत का अहिंसा व अपरिग्रह का संदेश पहुँचाना आवश्यक है। जिस प्रकार पूरे विश्व में हिंसा किसी न किसी रूप में बढ़ रही है, ऐसे में भारत ही अपनी विश्वगुरु की पहचान से ओरों के लिए मार्ग प्रशस्त करता है।

इस ओर एक पहल तो हुई है कि संयुक्त राष्ट्र संघ अहिंसा दिवस मनाने लगा है।

(क) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। **5**

(ख) गद्यांश का सारांश लगभग एक-तिहाई शब्दों में लिखिए। **30**

(ग) रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए। **15**

3. सरकारी पत्र के आवश्यक अवयवों का सविस्तार परिचय दीजिए। एक ज्ञापन तैयार कीजिए। अवर सचिव, रक्षा मंत्रालय की ओर से ज्ञापन होगा। इसमें श्री क ख ग ने अधीक्षक पद पर नियुक्ति के लिए आवेदन पत्र भेजा है। 05-01-2017 को भेजे गए इस आवेदन-पत्र के संदर्भ में उक्त पद की रिक्ति न होने की सूचना होगी। **50**

4. प्रस्तुत हिंदी गद्यांश का अंग्रेजी में अनुवाद कीजिए - **25**

इसी समय लेखक के मन में कष्टप्रद विचार उभरा। उसने सोचा की शायद उसे किसी को एक डॉलर देना है। उसे वह देना भूल गया है। उसने शायद किसी से उधार लिया हो। इसलिए अपने कर्जदाता से याचना करना है कि उसे अपना नाम बता दे, जिससे इसी सृष्टि में उनका कर्जा उतार दे। लेखक का कथन है कि निश्चय है कि सीमित धन के अलावा सारा ऋण चुका देगा। निश्चय ही अगर उसे टैक्सी के किराये का एक डॉलर देना है, तो उसे दे देगा। अंततोगत्वा लेखक 'ईमानदारी की ओर वापस आओ' आंदोलन चलाने का इच्छुक है। इस आंदोलन का लक्ष्य होगा कि सबको उनके उधार के लिए डॉलर की याद दिलाएँ। उन्हें सदा स्मरण रखना चाहिए कि महान राष्ट्र का निर्माण पूर्ण ईमानदारी और दृढ़ता से होता है।

5. प्रस्तुत अंग्रेजी गद्यांश का हिंदी में अनुवाद कीजिए – **25**

Mahatma Gandhi said, "I am a servant of India. I am trying to serve India. I serve the whole of mankind. I had thought in my early life that rendering service to India was not against the service of mankind. As my age advanced, and hope my intellect developed, I realized that my conception was right. After about fifty years of public service, I can say today that nation's service is not less important than world service. My this view has become even stronger. This is a very good principle by acceptance of this principle of condition of the world can improve and mutual envy among the different nations of the world can be ended.